इच्छा मृत्यु

जमुना बीनी
ईमेल- jamunabini@gmail.com

"मैं कब से तुझे आवाज लगा रही हूँ, सुनाई नहीं देता ? टीवी. देखने में इतनी मशरूफ़!" नाया (दादी) डगमगाती कदमों से जुनायती के पास आकर बोली। जुनायती ने अपनी बगल वाली कुर्सी नाया (दादी) की ओर खिसकाते हुए कहा- "जैसे कि आप बिल्कुल टी. वी. नहीं देखती। जब खुद देखती तो दुनिया-जहान भूल जाती। क्या देखना है आपको? एक-दूसरे को पटकनी देने वाला मार-धाड़ या बंदर, बाघ, भालू ?" जुनायती के छद्म क्रोध पर नाया (दादी) के सुकोमल होठ मुस्कुराहट में फैल गए। नाया (दादी) के उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर जुनायती बोली- "आपको जो भी देखना है, वह मैं लगा दूंगी। बस यह प्रोग्राम खत्म ही होने वाला है।" जुनायती की आतुर आँखें फिर टी. वी. से जा चिपकी।

नाया (दादी) उम्र का चौरासिवां वसंत देख चुकी थी। करीबन एक महीना पहले इलाज के लिए गाँव से ईटानगर आई थी। बढ़ती उम्र के साथ शरीर से ढेरों शिकायतें होने लगीं। गाँव से जो कोई भी आता कहता नाया (दादी) की सेहत अब पहले जैसी नहीं रही, कभी भी कुछ भी घट सकता है। मजबूरन गाँव जाकर जुनायती अपने साथ नाया (दादी) को शहर ले आई। तब से दोनों दादी और पोती डॉक्टरों द्वारा सुझाये अनगिनत मेडिकल टेस्ट करवाने अस्पतालों और डायग्नोस्टिक सेंटरों के खाक छानती फिर रही थीं। नाया (दादी) को शहर तनिक भी सुहा नहीं रहा था। रह-रहकर खेतों, मुर्गियों, सुअरों, बकरियों की याद आती और चुपचाप दो टूक आँसू बहाती। नाया (दादी) जब गाँव में थी तो हर शहर जाने वाले के हाथों जुनायती के लिए उपहार के रूप में मुर्गी भेजा करती थी। अगर कोई मुर्गी ले जाने से मना कर देता तब फिर नाया (दादी) गुस्से में भिन्नाती हुई उसे तमाम प्रकार के अभिशापों से नवाजती। इधर शहर के दो मंजिला दड़बेनुमा सरकारी क्वाटरों में मवेशी पालना बड़ा कठिन था। नाया (दादी) गाँव में भले ही वक्त पर खाना भूल जाये लेकिन रिश्तेदारों से कहकर मवेशियों के लिए चारा-पानी की व्यवस्था करना नहीं भूलती। जुनायती नाया (दादी) के दर्द को खूब समझती थी पर बीमारी में उनको वापस भेजना भी तो अक्लमंदी नहीं थी।

अस्पताल से लौटकर नाया (दादी) का अधिकांश समय टीवी. देखने में गुजर जाता, करने को कुछ होता ही नहीं । नाया (दादी) का पसंदीदा चैनल था नेशनल जियोग्राफ़िक। जंगल, पहाड़, नदी-झरनें, हाथी देखकर प्रकृति के करीब महसूसती और स्वंय को ढांढस बँधाती कि मैं भी जल्द ही स्वास्थ्य-लाभ के बाद अपने जंगल-पहाड़ों पर लौट जाऊंगी। कभी-कभार मन का स्वाद बदलने के लिए इंसानों का एक-दूसरे पर

जोर-आजमाइश करता कुश्ती का चैनल डब्ल्यू. डब्ल्यू. ई. देख लेती। वह हिंदी धारावाहिक कभी न देखती क्योंकि उन्हें भाषा जरा भी समझ में नहीं आती। टीवी. एक मगर देखने वाली दो और दोनों की पसंद अलग-अलग ! इसलिए दादी-पोती के बीच हल्की-फुल्की नोंक-झोंक चलती रहती।

बगल में बैठी नाया (दादी) उंघने लगी। अपनी बारी के इंतजार में थी। रहा नहीं गया तो बोली- "लगता है आज तुम मुझे टीवी. देखने नहीं दोगी।"

"बस नाया (दादी) यह प्रोग्राम खत्म ही होने वाला है" टीवी. पर नजरें गड़ाये जुनायती बोली।

टी. वी. पर चल रही परिचर्चा नाया (दादी) के पल्ले नहीं पड़ रही थी- "भाषा तो मैं समझ नहीं पा रही हूँ लेकिन इतना तो मालूम पड़ता है बहुत तीखी बहसबाजी हो रही है।"

"हाँ, नाया (दादी) विषय ही कुछ ऐसा है।"

"किस विषय पर, मैं भी तो जानूँ।"

समग्र परिचर्चा को संक्षिप्त में समझाती हुई जुनायती नाया (दादी) से बोली- " आप इतना समझ लीजिए कि एक व्यक्ति है उसे लाइलाज बीमारी है। सालों से उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा। अपनी दशा से तंग आकर उसने कोर्ट से अपनी मौत की गुहार लगाई है। यानी कि वह अपनी इच्छा से अपने जीवन का अंत करना चाहता है।"

"ओह 'मिसि-मुह' !"

"क्या कहा नाया (दादी) आपने ? " चौंकते हुए जुनायती ने पूछा।

"हाँ 'मिसि-मुह' यानी स्वेच्छा से मृत्यु का वरण।"

" अच्छा इसके लिए हमारी ईदु भाषा में पारिभाषिक शब्द भी है !!"

" होगा क्यों नहीं..! ईदु-मिश्मी समाज में इसका चलन था।"

" क्या..!" आश्चर्य से जुनायती का मुँह खुला का खुला रह गया।

बिना चेहरे पर कोई भाव लिए नाया (दादी) कहने लगी- " देखो नये जमाने के साथ अनेक चीजें पीछे छूट जाती हैं। बहुत छोटी थी तब मैंने कई लोगों को बदतर जीवन को त्यागकर मृत्यु को गले लगाते देखा।"

" रुकिए नाया (दादी)..मैं कुछ समझ नहीं पा रही। क्या देखा आपने..आत्महत्याएँ ?"

आत्महत्या और स्वेच्छिक-मृत्यु के अंतर को समझाती हुई नाया (दादी) बोली- " देख जुनायती दोनों के बीच एक महीन सी रेखा है। 'मिसि-मुह' में होता क्या है कि एक व्यक्ति को उसकी मृत्यु की प्राप्ति के लिए सगे-संबंधी, संगी-साथी और तो और पूरा गाँव उसकी सहायता करता है।"

"आपने किन-किन परिवारों में ऐसा घटित होते देखा ?"

" अरे ज्यादा दूर जाने की क्या आवश्यकता। मेरे मोगे नाबालिया (मोगे चाचा) ने यह कदम उठाया।"

जुनायती ने विस्मय से अपनी हथेलियों से मुँह ढक लिया। कुछ देर मौन रहकर आग्रह भरे स्वर में वह बोली- "नाया (दादी) विस्तार से बताइए न।"

नाया (दादी) ने अपनी आँखें बंद कर ली। बंद सजल आँखों में वर्षों का फ़ासला तय करती हुई अतीत के खुरदरी जमीन पर लौट गयी।

***

मक्खियों की भिनभिनाहट से मोगे की नींद उचट गयी। जब भी शरीर पोर-पोर दुखता वह इसी प्रकार सोने का असफल प्रयास करता। पल भर के लिए नींद आ भी जाती परंतु शरीर पर मंडराती मक्खियों के शोर से अक्सर नींद कच्ची रह जाती। मोगे को 'चेदे-चे' (कुष्ठ रोग) है। शुरूआत में काँख के पास एक फफोला निकला था। आहिस्ता-आहिस्ता पूरा शरीर फफोलों से भर गया। पहले थोड़ा चल-फिर लेता था किंतु अब फफोलों और छालों से उपजे सूजन के कारण घर के एक कोने में कराहता बेकार वस्तुओं की गठरी की तरह पड़ा रहता। केवल चेहरा बचा रह गया था, जाने चेहरे पर कब छालें उभर आयें। जिस कोने को वह अपना ठिकाना बनाता, छालों से निरंतर रिसता मवाद और पीव से उस कोने में दुर्गंध भभकने लगती। अपने ही शरीर की दुर्गंध से उसे उबकाई आने लगती।

इन सात महीनों में मोगे और उसके परिवार पर क्या-क्या न बीता। वे सारे प्रयास करके हार चुके थे। जंगली औषधीय पौधे आजमाया, ईगु (पुजारी) से झाड़-फूंक कराया, चार-पाँच सूअरों की बलि चढ़ाकर अनुष्ठान भी करवाया मगर नतीजा सिफ़र! गुजरते समय के साथ स्थिति बिगड़ती जा रही थी। मोगे की असहनीय पीड़ा और यातना को देख सिवाय रोने के उसके परिजन कुछ भी कर नहीं पा रहे थे। सबसे अधिक व्यथित और असहाय था मोगे का प्यारा 'आप्या' (भैया) चेपोस। वह मोगे पर जान छिड़कता था। उसके संकट और भय को अपना संकट और भय समझने वाला चेपोस के मन की शांति एकाएक गुम हो गयी जब से मोगे को यह दारुण रोग लगा। आस-पड़ोस गाँव के तमाम ईगु (पुजारी) के घरों की दौड़ लगाते-लगाते उसकी हालत भी पस्त हो चुकी थी। जब भी इलाज के लिए कोई नया ईगु (पुजारी) बुलाया जाता एक आस जगती कि मोगे की सेहत में कुछ तो बेहतरी होगी लेकिन सुधार तो दूर की बात उल्टे तबीयत में लगातार गिरावट आती जा रही थी। बड़े से बड़ा ईगु (पुजारी) आमंत्रित कर भव्य पूजा-अनुष्ठान कराया। विधि-अनुष्ठान संपन्न होने के बाद प्रत्येक ईगु (पुजारी) क्षमा-याचना में कहता- "मोगे के ऊपर खिनु (बुरी आत्मा) का प्रकोप है। इस खिनु के पास अपार शक्ति है। इसकी शक्ति का काट हमारे पास नहीं है। क्षमा करें।" पिछले छह-सात महीनों में यह वाक्य इतना दोहराया गया कि सुन-सुनकर चेपोस के कानों के पर्दें बस फटने ही वाले थे। मोगे की नारकीय दशा देखकर अब तो घर वाले भी उसके लिए मौत की कामना करने लगे। परंतु चेपोस को अब भी किसी चमत्कार की उम्मीद थी। उसे लगता रहा, अवश्य कुछ दिव्य घटित होगा और मोगे एकदम से भला-चंगा हो जायेगा। मगर मोगे के उस निर्णय ने चेपोस की सारी उम्मीदों की लौ को बुझा दिया, समस्त आशा-आकांक्षाओं पर तुषारापात कर दिया।

चेपोस ने एक भरपूर निगाह मोगे पर डाली फिर पूछा- " तो तुम्हारा फैसला अटल है ?"

" हाँ आप्या (भैया)। मुझे मुक्ति चाहिए इस अंतहीन पीड़ा से।" मोगे का आत्मविश्वास देख चेपोस चकित रह गया। आगे कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। बिल्कुल मौन साध लिया। चेपोस की लम्बी चुप्पी से मोगे असहज हो उठा। गला खँखारते हुए कहा- " आप्या (भैया) कुछ कहिए भी।"

" वाकई तुम सुनना चाहते हो ?"

" हाँ आप्या (भैया)।"

एक-एक शब्द बमुश्किल से उगला- "तुम कायर हो, तुम बहुत स्वार्थी हो। तुम तो बड़े आराम से अपने जीवन का अंत करके चले जाओगे लेकिन जो पीछे छूट जायेगा..उसका क्या ! क्या तुम्हारी यादें उन्हें नहीं सतायेगी। क्या वे चैन से रह पायेंगे? व्यक्ति जन्म लेता है फिर मर जाता है। जन्म और मरण के बीच वह स्मृतियों की पूंजी संचय करता है। और वस्तुओं की भाँति वह स्मृतियों की पूंजी अपने साथ लेकर नहीं जाता। यदि ऐसा होता तो किसी की मृत्यु के साथ ही उसकी सारी यादें भी मिट जानी चाहिए थी। पर नहीं, स्मृतियों की पूंजी यहीं रह जाएंगी। यह पूंजी बड़ी विचित्र है, जितना खर्च करो बढ़ती जायेगी और मन को मथती जायेगी।" कहते-कहते चेपोस की आँखें भीग गयी। मोगे से आप्या (भैया) की आँखों में आँसू देखा नहीं गया। अपनी नजरें चेपोस के चेहरे से हटाकर दूसरी दिशा की ओर देखते हुए बोला- "आप मेरे बारे में जो भी सोचना चाहते हैं, सोचिए। आपको पूरा अधिकार है। ऐसा कौन भाई होगा जो दूसरे भाई की स्वाभाविक मृत्यु नहीं चाहेगा...! किंतु मेरी परिस्थिति बहुत भिन्न है और विशेष भी। मैं अपनी स्वाभाविक मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहा हूँ तो इसकी पूरी संभावना है कि इस रोग से घर-गाँव के अन्य लोग संक्रमित हों। मैं तो अकथनीय वेदना भोग रहा हूँ, कोई मेरे कारण यह वेदना क्यों भोगे।" कमजोरी के कारण मोगे बोलते-बोलते रुक जाता, थोड़ा विराम लेता फिर कहना जारी रखता- "आप्या (भैया) आपको लगता है मैं बुज़दिल हूँ। नहीं आप्या (भैया) नहीं।" एक रूखी हँसी हँसते हुए- "मैंने भी इस जीवन से बहुत प्रेम किया मगर प्रेम में छला गया !! दरअसल आप्या (भैया) मैं पूरी हालात को एक दूसरी दृष्टि से देख रहा हूँ। एक शानदार दृष्टि ! जीवन मुझसे कह रहा है अपने परमाधिकार का प्रयोग करो, विरले को ही यह सौभाग्य मिलता है। आपको तो पता ही है बचपन से मुझे साहसिक कार्यों में कितना आनंद आता था। आपसे कहा भी था कि मैं बड़ा होकर भालू मारुंगा। बाद में भालू मारा भी। वह भालू भी न मेरी कल्पना से अधिक ताकतवर निकला। भालू के साथ मैं भी ढेर हो जाता वह तो ऐन मौके पर आकर आपने मेरा प्राण बचा लिया। मालूम है, इस बार भी आप मुझे बचाना चाहते हैं। मगर आप्या (भैया) यह मेरे जीवन का अंतिम साहसिक कार्य होगा, इसमें आप कोई विघ्न नहीं डालेंगे मैं कह देता हूँ। पूरी निष्ठा के साथ मैं स्वयं इसे अंजाम देना चाहता हूँ।

मौत भी इतनी मनहूस है कि सब लोग इससे भय खाते हैं लेकिन मैं नहीं आप्या (भैया)। पूरे होशो-हवास में अपने परमाधिकार का प्रयोग करते हुए अपनी इच्छा से मैं अपने लिए मौत को चुन रहा हूँ। हूँ न मैं हिम्मतवाला..?"

चेपोस भला क्या उत्तर देता। मोगे के तर्क ने उसे निरुत्तर कर दिया। चेपोस से कोई उत्तर बनता न देख मोगे ने आगे कहा- "जीवन को भार जैसा ढोता हुआ जीना नहीं चाहता और मौत भी घिनौनी नहीं चाहिए। अपने लिए एक शानदार मौत चाहता हूँ। बस आपसे सहायता चाहिए। मेरी एक अंतिम इच्छा है।" अंतिम शब्द सुनकर चेपोस का दिल बैठ गया। किसी तरह स्वयं को संयत करते हुये चेपोस बोला- "बेहिचक बोलो।"

"आप्या (भैया) मृत्यु के बाद मेरी रोगी आत्मा पुरखों के लोक में प्रवेश पा भी जाए तो वे मेरा आव-भगत करेंगे कि नहीं इसे लेकर मेरे मन में शंका कुलबुला रही है। पुरखों के संग उठना-बैठना, खाना-पीना नसीब होगा कि नहीं मैं नहीं जानता।" कुछ ठहरकर व्यंग्य भरी हँसी के साथ- "उस लोक में मेरी मलिन रोगी आत्मा का क्या हश्र होगा खैर यह तो वहाँ पहुँचकर देखा जायेगा। पर इतना तो निश्चित है इस लोक से मैं हँसी-खुशी विदा होना चाहता हूँ। अपनी मौत का जश्न मनाता हुआ। सबको दिखलाना चाहता हूँ अरे मौत उतनी भी अप्रिय नहीं जितना लोगों ने इसे समझ रखा है। कल आप सारे रिश्तेदारों को एकत्र करेंगे दावत के लिए। अंतिम बार सबको देखूंगा फिर सब साथ भोज करेंगे। तन-मन से तृप्त होकर इस लोक से महाप्रस्थान करूं यही मेरा इरादा है।" आने वाले कल के बारे सोच मोगे की आँखें आशा से चमक उठीं। अरसे बाद चेपोस ने अपने भाई की वीरान बुझी आँखों में यह चमक देखी थी। सूनी आँखों से निकलने वाली रोशनी में मोगे का समूचा व्यक्तित्व नहा उठा। सो भला चेपोस कैसे न कहता। रजामंदी में उसने बोला- "ऐसा ही होगा।"

****

मोगे का करुण निमंत्रण चेपोस ने घर-घर और दूसरे गाँवों में रहने वाले सभी संबंधियों तक बड़े जतन से पहुँचाया। जिसने भी दया पूरित आमंत्रण को सुना उसके मुँह से सर्द भरी आहें निकलीं। भेंट के रूप में जो भी लोगों के पास था..सूअर, मुर्गी, मदिरा सब चेपोस के घर भिजवाया ताकि दावत में कोई कोताही न रह जाए।

चेपोस के घर की किशोरियाँ जंगल जाकर टोकरी भरकर साग-सब्जी तोड़ लायीं और चावल से कंकड़ चुनकर धोकर भात और सब्जी पकायीं। घर की अधेड़ महिलाएँ ध्यानमग्न मदिरा छानने में व्यस्त तो लड़कें मदिरा और पानी पीने के लिए बाँस काटकर चोंगे बनाने में निमग्न थे। घर के वयस्क पुरुषों ने भेंट में मिला सूअर-मुर्गी को मारकर स्वादिष्ट माँस पकाया।

एक-एक कर परिजनों का घर में आना प्रारंभ हुआ। चेपोस द्वार पर खड़ा सबका स्वागत कर रहा था। लोगों की बढ़ती संख्या को देख चेपोस को अनुमान हो गया घर दावत के लिए छोटा पड़ रहा है। घर के भीतर झांका तो देखा पांव धरने तक की जगह नहीं। कोने-कोने तक लोग बैठे हुए हैं तो कुछ पसरे हुए हैं।

चेपोस ने लड़कों को बुलाकर कहा लोगों को सम्मान के साथ घर के नीचे वाले समतल भूमि पर ले जाओ। पहाड़ी टीले पर स्थित घर से लोगों की पंक्ति धीरे-धीरे उतरती हुई समतल मैदान में आ गयी। मेजबानों ने भोज के सभी व्यंजनों को नीचे पठार पर व्यवस्थित किया। सारे बंदोबस्त के बाद चेपोस और कुछ लड़के मोगे को नीचे लोगों के बीच उतार लायें। सबकी आँखें मोगे की ही राह देख रही थी।

ज्यों ही लोगों की दृष्टि मोगे पर पड़ी श्रद्धा और करुणा से अँखियाँ नम हो आईं। मोगे के चेहरे पर जरा सी भी शिकन नहीं थी। अनुपम कांति से चेहरा रौशन, उसकाआह्लाद उसकी आवाज में स्पष्ट झलक रहा था- " आप सबको एक साथ यहाँ देखकर मन धनेश पक्षी के पंखों के समान हल्का हो आया। आप लोगों से विनती है आप में से कोई नहीं रोएगा। आँसुओं का गीला बोझ लेकर मेरी आत्मा यात्रा नहीं कर पायेगी। मार्ग फिसलन भरा होगा। दुआ करें मेरी यात्रा सुगम हो। मैं समझता हूँ यह वक्त लम्बी-चौड़ी बातों का नहीं, जश्न का है। आप सबको शोक मनाने के लिए नहीं, मृत्यु-उत्सव मनाने के लिए आमंत्रित किया है मैंने। वैसे भी अपने मन की सारी बातें आप्या (भैया) से कह चुका हूँ। हाँ..एक बात कहना भूल गया था कि मेरी मृत्यु का संस्कार किस ईगु (पुजारी) के देख-रेख में संपन्न होगा? अपने लिए उत्कृष्ट और असाधारण मृत्यु चाहता हूँ तो ईगु (पुजारी) भी तेजस्वी और दिव्य शक्तिधारी चाहूँगा। ईगु में सर्वश्रेष्ठ ईगु कोतिगे मिमि को मैं चुनता हूँ। यह अच्छा होगा कि वही मृत्यु के समस्त विधि-नियमों को संपन्न कराकर मुझे अनुग्रहित करें।" ईगु कोतिगे अति सम्मानित ईगु (पुजारी) था। सभी उनकी अलौकिक शक्ति से परिचित थे। उनके विषय में कई किस्से-कहानियाँ लोक में प्रचलित थीं। मोगे की बुद्धिमत्ता की सबने दाद दी।

दावत परोसा जाने लगा। लोगों ने पेट भर भात-माँस खाया, खूब छककर मदिरा पीया। मोगे अधरों में मृदु हाँस सहेजे तब तक खाता पीता जब तक अघा नहीं गया। फिर नशे में होकर बेसुध लुढ़क गया।

****

भोर की तंद्रा को पक्षियों के कलरव ने तोड़ा। मोगे महीनों बाद गहरी और मीठी नींद सोया था। जागा तो मन हल्का-फुल्का इतना कि कुछ देर के लिए तन का सारा कष्ट बिसर गया। शारीरिक कष्टों पर जीत से अधिक उसे अपनी मानसिक दुर्बलता पर फतह की खुशी ज्यादा थी। बीमार शरीर को लेकर लम्बे समय तक निर्णय-अनिर्णय की दुविधापूर्ण स्थिति से जूझा था। दोराहें पर खड़ा जीवन के लिए एक राह तो चुनना था ही। जीवन में पहली बार भान हुआ चुनने की आजादी व्यक्ति का सर्वोत्तम अधिकार होता है।

चेपोस पहले जाग चुका था। अपने अनुज की प्रसन्नचित्त मुखमुद्रा देख पुलकित स्वर में कहा- " अनुष्ठान में प्रयोग के लिए बाँस और पत्ते लाने के लिए लड़कों को निकट के जंगल में भेज दिया है।" मोगे ने द्वार की ओर ताकते हुए कहा- " ईगु कोतिगे भी आते ही होंगे।" बस कहने भर की देरी थी। ईगु कोतिगे अपने आनुष्ठानिक पोशाक में सज-धज कर साथ दो सहायकों को लेकर दरवाजा पर नमूदार हुये।

आते ही ईगु कोतिगे और उनके सहायक अनुष्ठान की तैयारी में लग गये। लड़के भी जंगल से आ गए पत्तों और बाँसों के साथ। ईगु कोतिगे से निर्देश पाकर उनके सहायकों ने मोगे का नाप लिया ताकि उसके माप की 'आग्रा' (टोकरी) बुनी जा सके जिस पर सवार होकर मोगे 'ब्रो' (कब्र) तक का सफर तय करेगा। कुष्ठ रोगियों के शव को इसी रीति से ब्रो (कब्र) तक पहुँचाया जाने का रिवाज था। किशोरों ने मिलकर अपने भुजा-बल का प्रदर्शन करते हुए चंद घंटों में ही मिट्टी खोदकर ब्रो (कब्र) तैयार किया। मोगे की भाभी और अन्य औरतों ने मोगे के कपड़े-लत्ते, खाने-पीने के बर्तन वगैरह पोटली बनाकर बाँध दीं, पोटली को ब्रो (कब्र) में डालना आवश्यक था वर्ना मोगे की आत्मा अपने साजो-सामान खोजती हुई घर में वापस लौट आएगी।

मोगे शांतचित्त होकर अपनी मृत्यु का सारा इंतजाम देख रहा था। जिज्ञासा भरी आँखें देख रही थी ब्रो (कब्र) की खुदाई जहाँ लेटकर कभी न जागने के लिए अनंत निद्रा में वह सोने वाला था। देख रहा था भाभी को अपने वस्तुओं की पोटली बाँधते हुए, वे वस्तुएँ जिसकी उपयोगिता अब उसके लिए समाप्त हो चुकी थी। देख रहा था बाँस के पतले-पतले रेशों को आग्रा (टोकरी) का आकार लेते हुए जिस पर वह लदकर अपने अंतिम गंतव्य तक पहुँचने वाला था। देख रहा था विदाई देने के लिए गाँव-गिराँव के लोगों को उमड़ते हुए। मोगे अविचल होकर सब देख रहा था..सब कुछ अनुभूत कर रहा था..जीवन-डोर को क्षण-क्षण टूटते हुए ! मोह के सारे जकड़नों को तोड़ फेंकने का गर्व था उसे। आखिर व्यक्ति के लिए जीवन के मोह से बढ़कर बड़ा मोह होता भी है कोई !!

चेपोस ने इस उम्मीद से आखिरी बार मोगे को गौर से देखा कि कहीं वह अपना विचार बदलने का तो नहीं सोच रहा। मन से चाह रहा था काश ऐसा हो। मगर मोगे की आँखों में जीवन के प्रति घोर विरक्ति और अनासक्ति का भाव दिखा। फिर कुछ पूछने-पाछने का साहस नहीं हुआ। उसने भी अपना हृदय कठोर कर लिया। एक बार उसने उड़ती हुई निगाह से लोगों का रेलमपेल देखा जो मोगे के निर्णय के सम्मान में जा जुटे थे।

लगभग सारी तैयारियाँ पूरी हो गई थी। ईगु कोतिगे का मंत्र बुदबुदाता होंठ रुककर 'बादु' (कंबल) लाने का आदेश दिया। कंबल लाया गया। उन्होंने कंबल मोगे की देह पर लपेटा। उन्होंने और चेपोस ने साथ मिलकर मोगे को आग्रा (टोकरी) पर चढ़ाया। टोकरी पर चढ़ने से पूर्व मोगे ने लोगों से अनुरोध किया कि वे रोयें नहीं, रोने से उसकी यात्रा दुसाध्य और दुर्गम होगी। पर यह लोगों के लिए कितना कष्टकर था, लाख प्रयासों के बावजूद वे अपनी सिसकियाँ दबा नहीं पा रहे थे। ईगु कोतिगे आग्रा (टोकरी) को पीठ पर लादकर घर से ब्रो (कब्र) की ओर चल पड़ा। ब्रो (कब्र) के पास पहुँचते ही झुककर आग्रा (टोकरी) को नीचे किया। चेपोस ने आगे बढ़कर मोगे को आग्रा (टोकरी) से उतरने में सहायता की । मोगे ने उमड़ी भीड़ की ओर अंतिम दृष्टि डाली। उस दृष्टि में आद्रता थी, उत्साह और उत्कंठा भरी आद्रता। नयी यात्रा के आरंभ का एक उतावलापन था। ईगु कोतिगे और चेपोस की मदद से वह ब्रो (कब्र) में उतरा। उतरते ही पहले से बिछा

बिछावन में लेट गया। ईगु कोतिगे ने लेटे मोगे के हाथों में बाँस की पतली-लंबी हरी पत्तियाँ थमा दी ताकि दूसरे लोक में मच्छर-मक्खियों को पास भिनभिनाने से दूर भगाया जा सके। उसके बाद मोगे ने दोनों आँखें मींच लीं। ईगु कोतिगे ब्रो (कब्र) से ऊपर आये, अंजुरी में मिट्टी भरकर चेपोस को दिया। चेपोस ने नीचे लेटे भाई के शरीर पर पहली मिट्टी डाला। फिर लोग आगे आते गए और हथेलियों में मिट्टी लेकर डालते गए। ब्रो (कब्र) मिट्टी से भर गया तब बड़े-बड़े गोल शिलाखंडों से ब्रो (कब्र) को चारो ओर से ढक दिया गया। चेपोस ने ऊपर नभ की ओर ताकते हुए एक तीर खींचकर छोड़ा। मोगे ने भालू मारा था। मरा हुआ भालू की आत्मा मोगे की यात्रा में खलल डाल सकती थी, इसका पूरा अंदेशा था। भाई के प्रति अपने कर्तव्य को चेपोस ने मनोयोगपूर्वक पूरा किया।

****

"'नाबा' (पिता) चेपोस ने एक बूँद आँसू नहीं बहाया। सारी पीड़ा भीतर-भीतर ही ज़ज्ब कर लिया। दोनों ही भाई बहादुर थे।" कहकर नाया (दादी) ने एक लम्बी साँस भरी। नाया (दादी) के पलकों के कोर से कुछ अश्रु के कण चुहचुहा रहे थे। डबडबाती आँखों से जुनायती ने कहा- "पर नाया (दादी) आजकल चेदे-चे (कुष्ठ रोग) लाइलाज नहीं है।" नाया (दादी) ने हाँ मिलाते हुए कहा- "हाँ आज का समय होता तो नाबालिया (चाचा) मोगे का उचित उपचार होता। वह ठीक हो जाता। अपना घर-संसार बसाता। उनके बाल-बच्चे होते। नाती-पोते होते। केवल नाबालिया (मोगे) की ही बात नहीं, उन सभी लोगों की बात कर रही हूँ जिनको इस रोग ने ग्रसा। पर जुनायती मैं इतना ही कहूँगी प्रकृति के अंतर में अनेक अबूझ रहस्य छिपे हैं जो समय के साथ खुलता है। तब नहीं खुला था अब खुल गया।"

जुनायती सोचने लगी आज भले ही युवा ईदु-मिश्मी अपने समाज के उस कड़वे अतीत को पचा नहीं पाये किंतु वह उस दौर का त्रासद सच था।

(**परिचय :** लेखिका युवा कवयित्री एवं कहानीकार हैं। वर्तमान में राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर पद पर कार्यरत हैं।)